२.२. भाषा की परिभाषा

स्फुटवाक्करणोपात्तो, भावाभिव्यक्तिसाधकः।
संकेतितो ध्वनिव्रातः सा भाषेत्युच्यतेबुधैः॥ (कपिलस्य)

भाषा की परिभाषा के विषय में विद्वानों में पर्याप्त मतभेद है। अभी तक सर्वसम्मत भाषा का कोई लक्षण नहीं है। संघटनात्मक दृष्टि से भाषा-शास्त्रियों ने भाषा की परिभाषा की है कि—

भाषा यादृच्छिक वाचिक ध्वनि-संकेतों की वह पद्धति है, जिसके द्वारा मानव परस्पर विचारों का आदान-प्रदान करता है।[1]

इस परिभाषा में चार बातों पर ध्यान आकृष्ट किया गया है—१. भाषा एक पद्धति है, २. भाषा संकेतात्मक है, ३. भाषा वाचिक ध्वनि-संकेत है, ४. भाषा यादृच्छिक संकेत है। इन चार विशेषताओं का विवरण समझ लेना उचित है।

१. भाषा एक पद्धति है—भाषा एक सुसम्बद्ध और सुव्यवस्थित योजना या संघटना है, जिसमें कर्ता, कर्म, क्रिया आदि व्यवस्थित रूप से आ सकते हैं। सुव्यवस्थित पद्धति होने के कारण पद-रचना और वाक्य-रचना के विभिन्न नियम हैं, जिनका पालन करना अनिवार्य होता है। किन शब्दों-रूपों में तृतीया एकवचन में न् का ण् होगा, किन में नहीं। किन शब्दों में तृतीया एकवचन में आ लगेगा, कहाँ ना लगेगा, इन (एन) लगेगा। इस व्यवस्था का ही फल है कि किसी भी भाषा का भाषावैज्ञानिक दृष्टि से विवेचन और विश्लेषण किया जाता है और विभिन्न नियम बनाये जाते हैं।

२. भाषा संकेतात्मक है—प्रत्येक भाषा में जो ध्वनियाँ उच्चरित होती हैं, उनका किसी वस्तु या क्रिया या कार्य से सम्बन्ध होता है। ये ध्वनियाँ प्रतीकात्मक होती हैं। इनका किसी विशेष वस्तु या क्रिया से मौलिक सम्बन्ध नहीं है। कोई भी ध्वनि किसी भाषा में किसी एक वस्तु का बोध कराती है और वही ध्वनि दूसरी भाषा में दूसरे अर्थ को बताती है। इस तथ्य का ध्यान रखना चाहिए कि भाषा की ध्वनियाँ केवल संकेतात्मक या प्रतीकात्मक हैं।

३. भाषा वाचिक ध्वनि-संकेत है—मनुष्य अपनी वागिन्द्रिय की सहायता से जिन संकेतों का उच्चारण करता है, वे ही भाषा के अन्तर्गत आते हैं। अन्य प्रकार के संकेत—इंगित आदि, लाल-पीली झण्डियाँ आदि, तार और वायरलेस के विभिन्न

संकेत—भाषा के अन्तर्गत नहीं आते हैं। इसी प्रकार शंखनाद, भेरीनाद या बिगुल-ध्वनि आदि के संकेत, जो विभिन्न अर्थों की अभिव्यक्ति के लिए किये जाते हैं, भाषा के अन्तर्गत नहीं आते हैं। तार के संकेतों आदि की विभिन्न विशेषताएँ हैं और उनके द्वारा बहुत सूक्ष्म कार्य किया जाता है, तथापि उनकी तुलना वाचिक ध्वनि-संकेतों से नहीं की जा सकती है। वाचिक ध्वनि-संकेत सूक्ष्मातिसूक्ष्म मूर्त और अमूर्त, दृश्य-अदृश्य, निर्वचनीय और अनिर्वचनीय, सभी प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति में पूर्णतया समर्थ हैं। इन ध्वनियों की एक विशिष्ट प्रक्रिया है। जिस प्रक्रिया का सूक्ष्म विश्लेषण सम्भव है और इसके आधार पर ही 'ध्वनि-विज्ञान' नाम की एक शाखा प्रचलित है।

लिपि या लेखन-पद्धति भी यद्यपि भाषा का कार्य करती है, परन्तु यह मूल ध्वनियों का केवल संकेतात्मक चित्रण है, अतः लिपि को गौण रूप से भाषा कहा जाता है। इसी आधार पर उच्चरित ध्वनियों को लिपिबद्ध किया जाता है और लिपिबद्ध का तात्त्विक रूप से उच्चारण करना सम्भव होता है। यहाँ पर यह भी समझ लेना चाहिए कि वागिन्द्रिय से उत्पन्न सभी ध्वनियाँ सार्थक नहीं हैं और न उनका भाषा में ग्रहण ही होता है। जैसे—छींकना, खाँसना, गुर्राना, थूकना, चिल्लाना आदि। इनका भाषा-शास्त्र की दृष्टि से कोई महत्त्व नहीं है और न इनका विवेचन ही किया जाता है।

४. भाषा यादृच्छिक संकेत है—विभिन्न भाषाओं के अध्ययन से यह पूर्णतया स्पष्ट होता है कि भाषा में जिन ध्वनि-संकेतों का उपयोग किया जाता है, वे पूर्णतया यादृच्छिक (ऐच्छिक) हैं। किसी भी विशेष ध्वनि का किसी विशेष अर्थ से मौलिक या दार्शनिक सम्बन्ध नहीं है। प्रत्येक भाषा में किसी विशेष ध्वनि को किसी विशेष अर्थ का वाचक मान लिया जाता है और वह परम्परा के अनुसार उसी अर्थ का वाचक हो जाता है। दूसरी भाषा में अन्य शब्द उस अर्थ का बोध कराता है।

यदि हम बालक की भाषा-शिक्षण-पद्धति को ध्यान में रख कर विचार करते हैं तो ज्ञात होता है कि बालक अपने माता-पिता एवं सम्बन्धियों के द्वारा उच्चरित ध्वनि-संकेतों का अनुकरण करता है। वे जिसे माता, पिता, भाई, बहिन, गाय, घोड़ा कहते हैं, वह भी उसी प्रकार उन्हें उन नामों से पुकारता है। गाय को गाय और घोड़े को घोड़ा क्यों कहते हैं, इसका विवेचन नहीं करता। इस प्रकार एक समाज में कुछ विशिष्ट शब्द प्रचलित होते हैं, और वह समाज उन विशेष अर्थों को ग्रहण करता है। दूसरे समाज में पला हुआ व्यक्ति उन्हीं अर्थों को व्यक्त करने के लिए पूर्णतया भिन्न शब्दों का प्रयोग करता है। जैसे—अंग्रेज़ी परिवार में पला हुआ बालक उपर्युक्त अर्थों को व्यक्त करने के लिए बचपन से ही मदर, फादर, ब्रदर, सिस्टर, काउ, हॉर्स आदि शब्दों का प्रयोग करता है। इसी प्रकार जर्मन, फ्रेंच, रूसी, चीनी आदि भाषाओं में इन अर्थों के लिए अलग-अलग शब्द हैं। यदि किसी विशेष अर्थ के लिए किसी विशेष ध्वनि का ही नियंत्रण होता तो यह परिवर्तन सम्भव न होता। इससे स्पष्ट है कि भाषा में प्रयुक्त सभी संकेत यादृच्छिक हैं। जिस भाषा में जिस अर्थ के लिए जो संकेत स्वीकृत है, वही अर्थ उस भाषा में लिया जाता है।

यहाँ पर यह समझ लेना आवश्यक है कि यह संकेत पूर्णतया यादृच्छिक नहीं है।

प्रत्येक भाषा में यह संकेत रूढ़ हो गये हैं। उस भाषा में व्यक्ति-विशेष अपनी इच्छानुसार नये ध्वनि-संकेत का किसी विशेष अर्थ में प्रयोग तक तब नहीं कर सकता है, जब तक उसको सामाजिक स्वीकृति प्राप्त न हो गई हो। अतएव संस्कृत में संकेत के लिए 'समय' शब्द का प्रचलन है, जिसका अर्थ है—सामाजिक स्वीकृति। यदृच्छा के साथ में यह सामाजिक स्वीकृति अनिवार्य अंग है।

इस विवेचन से ज्ञात होता है कि भाषा एक व्यवस्थित पद्धति है। इसमें संकेतों के आधार पर अपने भावों की अभिव्यक्ति की जाती है। ये संकेत वागिन्द्रिय द्वारा जन्य ही होने चाहिए और इस संकेतों का आधार यदृच्छा या मानवीय कल्पना हो। भाषा के इस मौलिक स्वरूप को समझ लेने से उनकी भ्रान्त धारणाओं और अंध-विश्वासों का समूल उन्मूलन हो जाता है।